दयाल फर्टिलाइज़र्स ग्रुप का त्रैमासिक मुख-पत्र

दयाल कृषि बुलेटिन

अंक : 01 / 2012 माह : फरवरी से अप्रैल 2012 For Private Circulation only

गन्ने की खेती में नई क्रान्ति

भूमि की उर्वरा शक्ति व बेहतर किस्मों के अभाव या कम होने के कारण ही पिछले कुछ वर्षों से किसानों के खेत पर गन्ने की उपज निरन्तर कम हो रही है। इसी कमी के कारण अधिकतर किसान अपने खेतों से वह उपज नहीं ले पा रहे हैं जिसकी वह अपेक्षा करते हैं। महाराष्ट्र में औसतन जहाँ 400 क्विंटल गन्ना प्रति एकड़ तक पैदा किया जा रहा है, वहीं उ0प्र0 में मात्र 200 क्विंटल प्रति एकड़ गन्ने की औसत उपज प्राप्त हो रही है। कुछ सम्भावित कारण निम्न हो सकते हैं। भूमि में कार्बनिक पदार्थ की कमी, फफूँद जनित उकठा (Wilting) लगना, गन्ने के जमाव में समस्या, कल्लों (Tillers) की कम संख्या (Plant Crop or Ratton), सफेद गिंडार, तना भेदक, पाइरिल्ला व दीमक का प्रकोप आदि।

उपरोक्त समस्याओं के समाधान के लिए सन्तुलित उर्वरकों व दवाईयों का प्रयोग निम्न तालिका के अनुसार करें :–

रासायनिक व जैविक खादों का समन्वित प्रबन्धन

बुवाई पूर्व अन्तिम जुताई के पहले		बुवाई के समय कूडो में		प्रथम टॉप ड्रेसिंग		द्वितीय टॉप ड्रेसिंग	
अनमोल खाद नीम प्लस	120 किग्रा0	डी.ए.पी.	50–75 किग्रा0	(बुवाई के 55–65 दिन बाद)		(बुवाई के 75–80 दिन बाद)	
वसुधा बायो–बूस्टर (जीवाणु खाद)	2 किग्रा0	डी.ओ.पी.	20 किग्रा0	यूरिया	40 किग्रा0	यूरिया	40 किग्रा0
वसुधा बायो–फॉस (जीवाणु खाद)	2 किग्रा0	पोटाश	25 किग्रा0	सुपर एक्शन अमृत–G	10 किग्रा0	सुपर एक्शन मोनो ज़िंक	300 ग्राम
अनमोल डर्मा	2 किग्रा0	सुपर एक्शन पोटाश	8 किग्रा0	दयाल मोनो ज़िंक	5 किग्रा0	फैरस सल्फेट	500 ग्राम
अनमोल बास	1–2 किग्रा0	अनमोल सल्फर डी.पी.	10 किग्रा0	दयाल फैरस सल्फेट	10 किग्रा0	(आंशिक चिलेटिड)	
दयाल गन्ना बलवान	10 किग्रा0	या		अनमोल माइक्रो		सल्फोवेट DF	1 किग्रा0
		सल्फोरिच	8 किग्रा0	सुपर एक्शन	500 ग्राम		
		कैल्सिबोर	5 किग्रा0				

कीट नियन्त्रण : सफेद गिंडार, तना भेदक व दीमक से बचाव के लिए बुवाई के पूर्व **अनमोल बास** (ब्यूवेरिया बैसियाना) की 2 किग्रा0 मात्रा को कूडो में गन्ने के टुकड़ों (कटिंग) के ऊपर पानी में घोलकर स्प्रे करें या **अनमोल खाद नीम प्लस** में मिलाकर 24 घण्टे रखने के पश्चात् प्रयोग करें।

सफेद गिडार

दीमक

सफेद गिडार, तना भेदक व दीमक से बचाने के लिए अनमोल बास का प्रयोग ही लाभदायक है।

शीतकालीन (Early) धान की खेती

अगेती धान, साठा धान, चाइना पैडी इत्यादि नाम से जाने जाना वाला यह धान अधिकतर तराई क्षेत्रों में लिया जाता है क्योंकि इन क्षेत्रों में पानी की पर्याप्त मात्रा पाताल तोड़ कुओं (Artigen) के द्वारा उपलब्ध होती है तथा इन महीनों में धान की फसलों पर रोग व कीटों का प्रकोप भी काफी कम होता है। इसलिए इस मौसम में लगने वाले धान की उपज मुख्य धान की फसल से 20% तक अधिक होती है जिससे किसानों को अधिक लाभ मिलता है।

नर्सरी प्रबन्धन : 15 दिसम्बर से 15 फरवरी तक बीज को ताजे गर्म पानी में भिगोने के बाद नर्सरी में डाला जाता है तथा नर्सरी का क्षेत्र भी विशेष प्रकार से तैयार किया जाता है जिससे इन क्यारियों में ताजे गर्म पानी का प्रवाह निरन्तर बनाया जा सके और नई कोमल पौध को ठण्ड न लगे जिससे उसकी बढ़वार भली–भाँति हो सके।

बीज का सही जमाव व नर्सरी में स्वस्थ पौध के लिए 40 किग्रा0 बीज को 1–1 किग्रा0 **वसुधा बायो–बूस्टर (N) + वसुधा बायो–फॉस (P) + बायो–पोटाश (K)** की मात्रा से शोधित करे या बीज डालने के बाद उसके ऊपर नर्सरी में बुरकाव करें।

बुवाई पूर्व अन्तिम जुताई के पहले *		रासायनिक उर्वरक *		प्रथम टॉप ड्रेसिंग *		द्वितीय टॉप ड्रेसिंग *	
अनमोल खाद नीम प्लस	120 किग्रा0	(रोपाई के समय)		(बुवाई के 15–20 दिन बाद)		(बुवाई के 30–35 दिन बाद)	
वसुधा बायो–बूस्टर (जीवाणु खाद)	1–2 किग्रा0	डी0ए0पी0	25 किग्रा0	यूरिया	35 किग्रा0	यूरिया	35 किग्रा0
वसुधा बायो–फॉस (जीवाणु खाद)	1–2 किग्रा0	डी0ओ0पी0	20 किग्रा0	सुपर एक्शन अमृत–G	10 किग्रा0	सुपर एक्शन मोनो ज़िंक	300 ग्राम
अनमोल सूडो/डर्मा	2 किग्रा0	पोटाश	25 किग्रा0	दयाल मोनो ज़िंक	5 किग्रा0	फैरस सल्फेट	1 किग्रा0
अनमोल माइक्रो पाउडर	5 किग्रा0	सुपर एक्शन पोटाश	8 किग्रा0	अनमोल माइक्रो		(आंशिक चिलेटिड)	
		दयाल सल्फोरिच	4 किग्रा0	सुपर एक्शन	500 ग्राम	गेहूँ–धान स्पेशल	1 किग्रा0

* संस्तुति प्रति एकड़ हेतु

संजीत श्रीवास्तव – IPNM विभाग

दयाल उन्नत – भिण्डी बीज

अर्का अनामिका

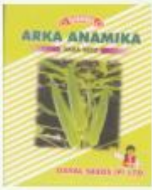

- कोमल, हरे व मध्यम लम्बे फल।
- गर्मी की फसल हेतु उत्तम।
- सामान्य प्रजातियों से अधिक उत्पादन।
- यलो मोजेक वायरस (पीतशिरा रोग) के प्रति सहनशील।

मानसी
रिसर्च भिण्डी

- कोमल, गहरे हरे, चमकदार फल।
- फल आकर्षक मध्यम लम्बे (12 से 15 सेमी.)
- बुवाई के 48-50 दिनों में तुड़ाई हेतु तैयार।
- तुड़ाई के बाद भी अधिक समय तक ताजा।
- अधिक उपज क्षमता व बार-बार तुड़ाई।
- यलो मोजेक वायरस (पीतशिरा रोग) के प्रति सहनशील।

उर्वशी
संकर भिण्डी

- मध्यम लम्बे पौधे, लम्बाई लगभग 140-150 सेमी.।
- गहरे हरे, कोमल व 12-15 सेमी. लम्बे फल।
- रोपाई के 45-48 दिनों में प्रथम तुड़ाई के लिये तैयार।
- अच्छी गुणवत्ता के फलों की बार-बार तुड़ाई।
- अधिक उपज क्षमता व फल लम्बे समय तक ताजा।
- यलो वेन मोजेक (पीला रोग) के प्रति सहनशील।

कोमल
संकर भिण्डी

- मध्यम लम्बे पौधे, लम्बाई लगभग 130-140 सेमी.।
- गहरे हरे, आकर्षक, चमकीले, मध्यम लम्बे फल (12-14 सेमी.)
- बुवाई के 45-48 दिनों में तुड़ाई के लिये तैयार।
- अधिक उत्पादन क्षमता एवं लम्बे समय तक लगातार फलों की तुड़ाई।
- यलो वेन मोजेक वायरस (पीला रोग) के प्रति सहनशील।
- बाजार में अधिक मूल्य।

दयाल उर्द (पी.यू.-31 एवं पी.यू.-35)

- काले, आकर्षक व मोटे दाने।
- कम समय (70-80 दिन) में तैयार।
- पीतशिरा रोग (YVM) के प्रति सहनशील।

दयाल मूँग (पूसा विशाल एवं पी.डी.एम.-139)

- मोटे हरे, आकर्षक रंग के दाने।
- कम समय (60-65 दिन) में अधिक पैदावार।
- पीतशिरा रोग (YVM) के प्रति सहनशील।
- उच्च गुणवत्ता युक्त आनुवंशिक शुद्ध बीज।

दयाल संकर चरी ज्वार

DHS-7 (लाल)

- मध्यम ऊँचाई के पौधे
- मध्यम चौड़ी पत्तियाँ
- पहली कटाई के बाद अधिक कल्ले
- 48 से 50 दिन के अन्दर प्रथम कटाई के लिए तैयार
- अधिक उत्पादन क्षमता

DHS-9 (सफेद)

- मध्यम लम्बे (230 से 235 सेमी.) आकार के पौधे
- मध्यम चौड़ी, आकर्षक, गहरी हरी पत्तियाँ
- प्रति पौधा अधिक पत्तियाँ (10 से 12)
- 45 से 48 दिन में प्रथम कटाई हेतु तैयार
- सामान्य प्रजातियों से 25% ज्यादा उत्पादन क्षमता

मेन्था तेल का उत्पादन कैसे बढ़ाएँ?

मेन्था के तेल के दाम में आई तेजी से लाभ लेने का मौका न गवाएँ

मेन्था (पिपरमेन्ट) एक शाकीय पौधा है। इसका उपयोग औषधि व सौन्दर्य प्रसाधन उद्योग में बहुतायत से किया जाता है। इसकी पत्तियों के अतिरिक्त इसके तेल का व्यावसायिक रूप से प्रयोग किया जाता है। तेल की गुणवत्ता इसके मूल्य निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है। इसके लिए जलवायु, मृदा, प्रजाति, बुवाई तथा काटने का समय एवं पोषक तत्वों के प्रबन्धन व खरपतवार नियन्त्रण आदि पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सूक्ष्म पोषक तत्वों तथा सल्फर के समुचित प्रयोग से इसकी उपज में अधिक लाभ होता है। इसी को ध्यान में रखकर **दयाल अनमोल माइक्रो मेन्था स्पेशल** का निर्माण किया गया है जिसमें फसल की आवश्यकतानुसार अधिक सक्रिय सल्फर युक्त सभी सूक्ष्म पोषक तत्व (ज़िंक, लोहा, तांबा, मैंगनीज, बोरान व मॉलिब्डेनम) घुलनशील अवस्था में उपलब्ध है।

भूमि उपचार : अन्तिम जुताई के समय 200 किग्रा० **अनमोल खाद नीम प्लस** + 2 किग्रा० **अनमोल डर्मा** (जैव फफूँदीनाशक, उकठा व तना गलन से बचाव हेतु) का प्रयोग करें। 30 किग्रा० डी०ए०पी० + 20 किग्रा० **डी.ओ.पी.** + 25 किग्रा० पोटाश + 8 किग्रा० **सुपर एक्शन पोटाश** + 5 किग्रा० **अनमोल माइक्रो मेन्था स्पेशल** + 8–12 किग्रा० दयाल **सल्फोरिच** या 20 किग्रा० **अनमोल सल्फर डी०पी०** का प्रति एकड़ प्रयोग करें।

पौध रोपड़ : रोपाई 15 फरवरी से 15 अप्रैल के बीच अवश्य कर दें। इसके बाद रोपाई करने से उपज बहुत कम हो जाती है। पौध की जड़ों का शोधन **अनमोल डर्मा** से अवश्य करें।

टॉप ड्रेसिंग : प्रथम टॉप ड्रेसिंग : रोपाई के 25 दिन बाद 25–30 किग्रा० यूरिया + 1–2 किग्रा० **अनमोल माइक्रो मेन्था स्पेशल (आंशिक चिलेटेड)** + 3 किग्रा० **मोनो ज़िंक** + 5–10 किग्रा० **सुपर एक्शन अमृत–G** + 2–3 किग्रा० **कैल्शिबोर** + 1 किग्रा० **सल्फोवेट डी.एफ.** प्रति एकड़ प्रयोग करें।

द्वितीय टॉप ड्रेसिंग : रोपाई के 50 दिन बाद 25 किग्रा० यूरिया + 1–2 किग्रा० **सल्फोवेट DF** का प्रयोग करें।

पर्णीय छिड़काव : 250 ग्राम **बोरोफर्ट** + 250 मिली० **सुपर एक्शन** अमृत + 500 मिली० **अनमोल माइक्रो तरल** को 100–150 लीटर पानी मे घोलकर प्रति एकड़ प्रयोग करें। यदि फफूँद या गलन की सम्भावना हो तो 2 किग्रा० **अनमोल सूडो** + 250 ग्राम गुड़ भी उपरोक्त छिड़काव में प्रयोग करें।

नोट : 1. पीली पड़कर पत्तियों का गिरना उपरोक्त उत्पाद के प्रयोग से पूरी तरह से रोका जा सकता है।

2. उपरोक्त स्प्रे से बारिश होने पर भी उपज में तेल की मात्रा नहीं घटती है।

फरवरी-अप्रैल माह की कृषि क्रियायें

ग्रीष्मकालीन मक्का

फरवरी-अप्रैल माह में : दयाल की उच्च गुणवत्ता, कम अवधि (80-90 दिन) वाली संकर किस्में **अनमोल मक्का 11** व **अनमोल** की बुवाई 8-10 किलो बीज प्रति एकड़ की दर से करें डी.ए.पी. 40 किलो + 25 किलो पोटाश + **मकई राजा** 3 किलो की दर से प्रति एकड़ खेत में प्रयोग करें। मक्का में **मकई राजा** प्रयोग करने से सफेद कली (White Bud) बीमारी पौधे में नहीं आती है।

सब्जियाँ : कद्दू, खीरा, लौकी, तोरई, तरबूज, खरबूजा व करेला

फरवरी-मार्च : कद्दू वर्गीय सब्जी जैसे खीरा, लौकी, तोरई, तरबूज, खरबूजा व करेला का उचित समय है। कद्दू वर्गीय एवं टमाटर, मिर्च आदि सब्जियों में जड़ में **कैल्शिबोर** एवं स्प्रे में **सुपर एक्शन अमृत द्रव** + **अनमोल बून** के प्रयोग करने से फूलों की संख्या में बढ़ोत्तरी के साथ-साथ फल उच्च क्वालिटी का स्वस्थ प्राप्त होता है एवं फल की तुड़ाई के बाद अधिक दिनों तक भण्डारण भी कर सकते हैं।

तैयारी : 1 फीट गहरे व 2 फीट चौड़े गड्ढे/थाले की खुदाई करके 2 से 4 दिन के लिए धूप लगने के लिए छोड़ देना उचित रहता है तथा गड्ढे की भराई के लिए 120-200 किलो **अनमोल खाद** + 2 किलो **वसुधा बायो-बूस्टर (N)** + 2 किलो **वसुधा बायो-फॉस (P)** + 8 किलो **सुपर एक्शन पोटाश (K)** + 1 किलो **अनमोल डर्मा** को मिलाकर 48 घण्टे रखने के बाद, इस मिश्रण की 2 किलो ग्राम मात्रा प्रति गड्ढे की दर से पर्याप्त मात्रा में मिट्टी मिलाकर भराई 1 फीट जमीन से ऊँचाई तक करें, उपरोक्त मात्रा करीब 60-100 गड्ढे के लिए पर्याप्त है। 50 ग्राम डी.ए.पी. + 25 ग्राम पोटाश + 25 ग्राम **अनमोल माइक्रो** प्रति गड्ढे में बीज बुवाई से पूर्व प्रयोग करें।

मार्च-अप्रैल : बुवाई के 25 से 35 दिन के बाद उपरोक्त सब्जी की पौध पर 1 किलो **अनमोल सूडो** या 250 मिली0 **सूडोकेयर** (पर्णीय रोग, चूर्णिल आसिता या दहिया रोग की रोकथाम व पादप वृद्धि में सहायक) + 250 मिली **सुपर एक्शन अमृत द्रव** + 500 मिली **अनमोल माइक्रो द्रव** + 250 ग्राम **वेजमोर माइक्रो फूड** को 200 ली. पानी में घोलकर एक एकड़ की पौध की बेलों पर भली-भाँति पर्णीय छिड़काव करें जिससे फूल व फल अधिक लगेंगे।

भिण्डी, मिर्च व प्याज

फरवरी से अप्रैल : यह माह उपरोक्त सब्जियों की बुवाई के लिए उपयुक्त समय है। भूमि उपचार में 160 किलो **अनमोल खाद** + 2 किलो **वसुधा बायो-बूस्टर (N)** + 2 किलो **वसुधा बायो-फॉस (P)** + 8 किलो **सुपर एक्शन पोटाश (K)** + **अनमोल डर्मा** 2 किलो को कम से कम 8 घण्टे मिलाकर रखने के बाद प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें। डी.ए.पी. 35 किलो + पोटाश 25 किलो + **अनमोल माइक्रो** 5 किलो प्रति एकड़ की दर से खेत में बुवाई के समय प्रयोग करें। बुवाई के 30 दिनों के बाद यूरिया 25 किलो + दयाल **मोनो जिंक** 3 किलो (या दयाल **जिंक सल्फेट** 5 किलो) + **सुपर एक्शन अमृत-G** 5 किलो + **कैल्शिबोर** 3 किलो की दर से प्रति एकड़ क्षेत्रफल में प्रयोग करें।

पर्णीय छिड़काव : 250 मिली0 **सुपर एक्शन अमृत द्रव** + 500 मिली0 नया **अनमोल बून** स्प्रे लाभदायक है।

अनमोल माइक्रो प्याज-लहसुन स्पेशल

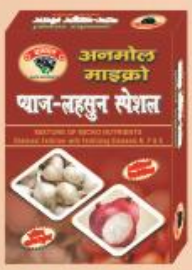

प्याज़ एवं **लहसुन** सामान्यतः खाने में मसाले की तरह तथा औषधि उद्योग में त्वचा सम्बन्धी विकारों की दवा आदि बनाने में विशेष प्रयोग किया जाता है। लहसुन के मूल्य का निर्धारण सामान्यतः इसकी स्वस्थ गाँठ (बल्ब), आकार तथा सुगन्ध के आधार पर किया जाता है। उच्च गुणवत्ता तथा अधिक उत्पादन हेतु प्याज व लहसुन की फसल को सूक्ष्म पोषक तत्वों की उचित मात्रा में आवश्यकता होती है। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर दयाल ने **अनमोल माइक्रो 'प्याज़-लहसुन स्पेशल'** का निर्माण किया है जिसमें फसल की आवश्यकतानुसार सभी पोषक तत्व जैसे ज़िंक, मॉलिब्डेनम, लोहा, तांबा, मैंगनीज़, बोरॉन, कैल्शियम व सल्फर घुलनशील अवस्था में उपलब्ध हैं।

प्रयोग विधि : (1) 1 से 2 किग्रा0 प्याज व लहसुन स्पेशल की मात्रा को बुवाई के पूर्व या प्रथम टॉप ड्रेसिंग में पर्याप्त बालू या मिट्टी या यूरिया के साथ मिलाकर प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें।

(2) पर्णीय छिड़काव में 0.5 से 1 किग्रा0 मात्रा को 150 ली0 पानी में घोलकर खड़ी फसल पर छिड़काव (स्प्रे) करें।

स्वस्थ आम - स्वस्थ दाम

फरवरी-मार्च-अप्रैल : यह माह आम पर पर्णीय छिड़काव के लिए सर्वोत्तम है। 500 ग्राम **सल्फोवेट DF** + 500 मिली. दयाल **फ्रूट किंग** + 500 मिली0 **अनमोल बून** को 250 ली. पानी में घोलकर पर्णीय छिड़काव करने से आम में फूल तथा फल धारण करने की क्षमता में वृद्धि होती है व पर्णीय रोगों से छुटकारा मिलता है। आम में **सल्फोवेट** के साथ **फ्रूट किंग** का स्प्रे करने पर फल आकर्षक, स्वस्थ एवं बीमारी रहित प्राप्त होता है एवं फल में रस (गूदा) की मात्रा भी बढ़ती है।

नोट : 1. ज़िंक वाली खाद को **फास्फेटिक खाद** (डी.ए.पी. या सुपर फास्फेट) के साथ मिलाकर प्रयोग न करें।
2. उपर्युक्त संस्तुतियाँ सामान्यतः एक एकड़ क्षेत्रफल हेतु हैं।

मक्का की खाद - मकई राजा™

मक्का स्पेशल

मकई राजा से लाभ

- मोटे व वजनदार मक्के के दाने।
- भुट्टे में भरपूर दानों की संख्या।
- समान रूप से पकने में सहायक।
- व्हाइट बंड (कली) रोग रोकने में सहायक।
- यूरिया की बचत।
- ज्वार व बाजरा की भी भरपूर उपज में सहायक।

प्रयोग मात्रा व विधि : 3–5 किग्रा० प्रति एकड़ बुवाई के समय या प्रथम टॉप ड्रेसिंग में यूरिया के साथ मिलाकर प्रयोग करें।

पर्णीय छिड़काव : खड़ी फसल में 1/2 किलो दयाल मकई राजा 200 ली० पानी में घोलकर 15 दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव करें। छिड़काव करते समय घोल में 500 ग्राम बिना बुझा चूना अथवा 1 से 2 किग्रा० यूरिया मिलाकर महीन कपड़े से छानकर प्रयोग करें।

प्रगतिशील कृषकों के विचार

मैंने पिछले वर्ष 5 एकड़ मक्का लगाई, उसमें 3 एकड़ में दयाल कम्पनी का **मकई राजा** लगवाया, उसके परिणाम अति संतोषजनक मिले जिससे हमारे मक्का में उत्पादन ज्यादा हुआ। मकई राजा के प्रयोग से 10 कुन्तल प्रति एकड़ पैदावार अधिक हुई। अतः मैं इस वर्ष मकई राजा का प्रयोग अपने सभी मक्का की फसल में करूँगा।

–**उमेश चन्द्र,** ग्राम किस्तियपुर, पो० ताहपुर, जिला कन्नौज. मोब.: 09837740524

मैंने इस वर्ष बरसात में 5 एकड़ मक्का बोई थी तथा हमने अपने 3 एकड़ में दयाल कम्पनी का 15 किग्रा० **मकई राजा** प्रयोग किया था। मक्का बहुत अच्छी हो गई तथा जिसके परिणाम बहुत अच्छे आये और हमारी मक्का का बहुत टॉप उत्पादन हुई। मकई राजा के प्रयोग से हमारा उत्पादन 15 कुन्तल प्रति एकड़ अधिक हुआ। अतः हम अपने सारे खेतों में मक्का की फसल में मकई राजा जरूर–जरूर प्रयोग करेंगे।

–**नन्दलाल पटेल,** ग्राम भवानी सराय, पो० माधवनगर, जिला कन्नौज. मोब.: 09794777583, 9794581268

मैं पिछले तीन वर्षों से दयाल कम्पनी के उत्पाद प्रयोग कर रहा हूँ। पिछले वर्ष लहसुन की फसल के समय दयाल के प्रतिनिधि मुझसे आकर मिले व उन्होंने लहसुन के खेत की तैयारी के समय **अनमोल खाद नीम प्लस** व **वसुधा NPK** जीवाणु खाद का प्रयोग करवाया। मैं हमेशा लहसुन की फसल में ऊपर से डी.ए.पी. लगाता था किन्तु पिछले वर्ष डा० साहब ने डी.ए.पी. को नहीं लगाने दिया। जिसका रिजल्ट मुझे बहुत ही अच्छा मिला। पूरे गाँव में मेरी पैदावार व क्वालिटी सबसे अच्छी थी, विशेषकर उनसे जिन्होंने ऊपर से डी.ए.पी. का प्रयोग किया।

–**जयपान सिंह** ग्राम नगला दुर्जन, ब्लॉक जसराना. मोब.: 09639807438

मैंने दयाल फर्टिलाइजर्स के अधिकारी के सुझाव पर एक एकड़ खेत में **संकर धान 1021** लगाया। धान की रोपाई से पहले 3 बोरी **अनमोल खाद नीम प्लस** + 3 किग्रा० **वसुधा बायो–N** + 3 किग्रा० **वसुधा बायो–P** + **वसुधा बायो–K** + 1 किग्रा० **अनमोल डर्मा** एक साथ मिलाकर 24 घंटे छाया में रखने के बाद अन्तिम जुताई के पहले खेत में डालकर लेव (पानी में जुताई) लगाया, तत्पश्चात् रोपाई करवा दी। पहली टॉप ड्रेसिंग 20–25 दिन बाद 5 किग्रा० **अनमोल अमृत–G** + 5 किग्रा० **मोनो ज़िंक** + 3 किग्रा० **कैल्शिबोर** दिया। दूसरी टॉप ड्रेसिंग में 65–70 दिन पर 5 किग्रा० **अनमोल अमृत–G** + 3 किग्रा० **गेहूँ–धान स्पेशल** + 3 पैकिट **आंशिक चिलेटेड सुपर एक्शन मोनो ज़िंक** दिया। धान का उत्पादन बहुत अच्छा 28 कुन्तल/एकड़ हुआ। मेरा यह कदम बढ़ते रासायनिक खादों की कीमत तथा उत्पादन में कमी होना है। रासायनिक खादों से मेरा उत्पादन 25 कुन्तल/एकड़ धान होता था। अब मैं दयाल के उत्पादों का प्रयोग करता रहूँगा तथा हमारे आस–पास के किसानों ने भी दयाल उत्पाद प्रयोग करना शुरु कर दिया है।

–**राजेश प्रसाद उपाध्याय,** ग्राम रघईपुर, पो० जिगना, ब्लॉक–छानबे, जिला मिर्जापुर. मोब.: 09936458810

दयाल AGRI-BUSINESS

दयाल पशु–आहार

सम्पादक **डॉ० जितेन्द्र कुमार सिंह – दयाल फर्टिलाइज़र्स ग्रुप,** परतापुर, मेरठ फोन : 0121–2440130–32 हेतु **नन्दन एडवरटाइज़िंग कं०,** मेरठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित